Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

चांदनी – कवि गुलाब

Veemmi Rani*

Research Scholar

सार – ***चांदनी के गीतों का रचनाकाल सन १९३९ ई. से १९४५ के मध्य का है तथा इसका प्रकाशन १९४५ में हुआ था। चंद्र और चंद्रानन दोनों सदा से सहदयों को लुभाते रहे हैं। कवि गुलाब को भी चांदनी ने बहुत मुग्ध किया है। चांदनी के गीत कवि की भावुकता का मुखरित रूप है। विश्व का कदाचित ही कोई ऐसा कवि हो जिसने चांदनी पर अपनी लेखनी न उठायी हो पर किसी एक कवि ने लगभग पचास गीत लिखे हों यह अभी देखने में नहीं आया है।***

----------X----------

गुलाबजी ने चांदनी की विभिन्न भंगिमाओं को चित्रित किया है। जिस प्रकार चांदनी की हर किरण हृदय में सुधा बरसाती है उसी प्रकार गुलाबजी की पुस्तक चांदनी का प्रत्येक गीत अपने संस्पर्श से हृदय के तार को झंकृत कर देता है। कवि ने चांदनी का मानवीकरण करके उसके विविध चित्र प्रस्तुत किए हैं। कहीं उसका हास है-

किरण वृंतों पर सुनहरी

कुंद सित घन पांत फहरी

नखत मणियां, ओस-कणियां

पवन-पिंग पराग-लहरी

हंस रही ध्रुव के हिमाद्दत कुंज में मानों दुपहरी

पीत रवि छवि शीत चंद्र प्रकाश सी

चांदनी हिम हास सी[1]

कहीं चांदनी के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं-

अंग रंगे तारों की झलकें

नत चितवन, निद्रालस पलकें

पगतल चुंबित श्यामल अलकें

आधी रात, विचरती जूही-वन में बाला कोई

जल-थल छवि मंत्रित थिर बसते

पल-पल नभ से फूल बरसते

लाज भरे मधुराधर हंसते

अटपट गति से चली आ रही कुछ खोयी-खोयी

राह कंटीली ज्योत्सना मधुमय

मुख लावण्य श्री अरूणोदय

हुआ कुंज में अंधकार लय

प्रात समझकर जागी दुनिया रात देख फिर सोयी

चांदनी खिली दूध की धोयी[२]

कहीं सुरपुर की मालिनी के रूप में उसका वर्णन करते हैं-

पुलकित उर फैलाए झोली

पहुंची सभा मध्य जब भोली

मूक पुरंदर, शचि भ्रू डोली

हुई अवनि तल पर निर्वासित मौक्ति लुटी मरालिनी

ज्योत्सना सुरपुर की मालिनी।[३]

कभी वह कवि को चांदनी परी के जैसी दिखाई देती है-

निरख नगक छवि बेसुध जगती

www.ignited.in

त्रिभुवन मृदु चितवन से ठगती

रति से भी वह सुंदर लगती

नभ की रत्न परी

दिगंबर अंबर से उतरी[४]

कभी चांदनी वन वन में भटकती दिखाई देती है

फूटी कर से छुटकर गागर

विफल बह रहा रस का सागर

तट से दूर गए नट नागर

बिरहिन राधी सी रो रोकर ज्यों सिर पटक रही

चांदनी वन वन भटक रही।[५]

कहीं पर चांदनी फूल चुनती हुई बाला जैसी दिखाई देती है, कवि कहते हैं-

नव मृणाल से भुज लचकीले

नभ वेणी बंधन से नीले

झरते तारक कुसुम रंगीले

देख रही मुख आभा अपनी ओसों के दर्पण में

चांदनी फूल चुन रही वन में।[६]

कभी वह वन के बीच हंसती हुई नजर आती है-

मुख पर झीना अंचल खींचे

सकुच नयन पंखुरियां मीचें

खड़ी आम्र के तरू के नीचे हंसती हुई मिली

चांदनी वन के बीच खिली।[७]

कहीं अभिसारिका चांदनी सोलह श्रृंगार करके प्रियतम से मिलने के लिए मचल रही है-

अलकों में मुक्ताहल भरके

भाल बीच शशि बिंदी धरके

हंसी सिंगार सोलहों करके

नभ पर खड़ी खड़ी

आज तो पूनो मचल पड़ी[८]

कहीं चांदनी मुग्धा नायिका की तरह प्रथम मिलन के लिए आयी है-

चंद्रमुखी तुम चांद बनी मैं तृषित चकोर समाज

नील वसन, कृश गोरे तन पर श्रम कण रहे विराज

भू पर ज्यों उतरी स्वर्गगा तारों का पट साज

मद के भार झुकी चितवन में प्रथम प्रणय की लाज[९]

इस प्रकार चांदनी काव्य संग्रह में एक ही चांदनी को कवि ने अनेक उपनाम दिए हैं जो रूप गुण में तत्सदृश कोमल तथा मनोहर हैं। संभवतरू कवि की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने कहीं भी उपमानों की पुनरावृत्ति नहीं की है। यह उनकी असाधारण प्रतिभा का प्रमाण है। हां, एक उपमान धुनी रुई सी का प्रयोग कुछ स्थलों पर आया है। संभवतः ऐसा कवि का उस उपमान के प्रति विशेष लगाव के कारण हुआ है।

इन गीतों के विषय में श्रीकृष्णदेव प्रसाद गौड़ बेढब बनारसी ने भूमिका में लिखा है- यद्यपि विषय एक चांदनी ही है तथापि भावों का पिष्टपेषण नहीं हुआ है। एक ही चित्र उलट-पुलटकर दूसरी बार नहीं आया है। चित्रों में सजीवता तो है ही, गति भी।[१०]

कवि की रचनाधर्मिता ने छायावादी रहस्यवादी संस्कारों में संस्कारित परिवेश में जन्म लिया है। अतः छायावादी कवियों की भांति गुलाबजी ने भी प्रकृति का मानवीकरण करते हुए उसे कहीं प्रेमिका, कहीं सुंदरी, कहीं अभिसारिका, कहीं अप्सरा तथा कहीं मलिनी आदि रूपों में देखा है। पद्मभूषण श्रीनारायण चतुर्वेदी ने इन गीतों के विषय में लिखा है-

कवि ने प्रत्येक गीत में चांदनी के रूपक के निर्वाह के साथ प्रेम की विविध मनोदशाओं के भी सरस चित्र उतारे है। कवि के अंतर्जगत की भी झलिकदयां इनमें स्पष्ट हैं और लगता है चांदनी के माध्यम से कवि ने प्रेम गाथा का आद्यंत चित्रण किया है। जिस भाषा का प्रयोग इन गीतों में कवि ने किया है वह हिंदी के छायावादी कवियों की भाषा का ही विकास नहीं है, बंगाल के रवींद्रनाथ, संस्कृत के कवि जयदेव और

www.ignited.in

रीतिकालीन कवियों की भाषा की झंकार भी उनमें देखी जा सकती है।[११]

इन गीतों में शब्दों का चयन भी कवि ने बड़ी कुशलता से किया है। कवि के हाथों में शब्द नाचते हुए आते हैं। मधुराई और सुधराई दोनों ही इन रचनाओं में पायी जाती है।

सित घन फेनोच्छवसित हासमय

ऊर्मि निलय मधु मलय लास मय

तारक शत बुद् बुद् विलासमय

रुद्ध ज्वार, दिशि कुल डुबाती लो फिर लौट पड़ी।

ज्योत्सना रजत सिंधु सी उमड़ी।[१२]

इस प्रकार किसी भी स्थल पर भाव तथा भाषा में शिथिलता नहीं आने पायी हैं। चांदनी के गीतों में भाषा विधान और बिम्ब विधान दोनों में कवि की मौलिकता है।

अर्जुन चैबे काश्यप जी ने चांदनी के गीतों पर मुग्ध हो लिखा है- मानव सुलभ वृतियों की अंगड़ाई को प्रकृति छटा में रंजित करने में दक्ष एक भाव को विविध लय में, अनगिनत रागों को डुबो देने में और अभिव्यंजना को सर्वसुलभ बनाने में सतत सचेत, हिंदी कविता कानन में सदैव अजस्त्र रूप से वसंत श्री देखने के अभ्यासी कवि गुलाब की यह चांदनी, कविता को, प्रकृति को, सुंदरता को, सौरभ को, एक नए, निराले तथा अनूठे ढंग से देखने के लिए हिंदी पाठकों को आमंत्रित करती है।१३

संदर्भ सूची

१. गुलाब ग्रंथावली, प्रथम खण्ड, भाग-१, चांदनी, पृ. ८९

२. वही, पृ. ९०

३. वही, पृ. ९३

४. वही, पृ. ९३

५, वही, पृ. ९८

६. वही, पृ. ९९

७. वही, पृ. १०६

८. वही, पृ. ९०

९. वही, पृ. १०८

१०. वही, पृ. भूमिका, पृ. ८३

११. वही, पृ. भूमिका

१२. वही, पृ. ९२

१३. वही, पृ. ८२

Corresponding Author

Veemmi Rani*

Research Scholar